लेखक परिचय

हिन्दी और मै थली के अप्रतिम लेखक और क व नागार्जुन का असली नाम वैद्यनाथ मश्र था परंतु हिन्दी साहित्य में उन्होंने नागार्जुन तथा मै थली में यात्री उपनाम से रचनाएँ कीं। काशी में रहते हुए उन्होंने 'वैदेह' उपनाम से भी क वताएँ लखी थीं। सन् 1936 में संह्ल में ' वद्यालंकार परिवेण' में ही 'नागार्जुन' नाम ग्रहण कया। आरंभ में उनकी हिन्दी क वताएँ भी 'यात्री' के नाम से ही छपी थीं। वस्तुतः कुछ मत्रों के आग्रह पर १९४१ ईस्वी के बाद उन्होंने हिन्दी में नागार्जुन के अलावा कसी नाम से न लखने का निर्णय लया था।

उनकी पहली हिन्दी रचना 'राम के प्रति' नामक क वता थी जो 1934 ई० में लाहौर से निकलने वाले साप्ताहिक ' वश्वबन्धु' में छपी थी।

नागार्जुन लगभग अड़सठ वर्ष (सन् 1929 से 1997) तक रचनाकर्म से जुड़े रहे। क वता, उपन्यास, कहानी, संस्मरण, यात्रा-वृत्तांत, निबन्ध, बाल-साहित्य -- सभी वधाओं में उन्होंने कलम चलायी। मै थली एवं संस्कृत के अतिरिक्त बाङ्ला से भी वे जुड़े रहे। बाङ्ला भाषा और साहित्य से नागार्जुन का लगाव शुरू से ही रहा। काशी में रहते हुए उन्होंने अपने छात्र जीवन में बाङ्ला साहित्य को मूल बाङ्ला में पढ़ना शुरू कया। मौ लक रुप से बाङ्ला लखना फरवरी 1978 ई० में शुरू कया और सतंबर 1979 ई० तक लगभग 50 क वताएँ लखी जा चुकी थीं। कुछ रचनाएँ बँगला की पत्र-पत्रिकाओं में भी छपीं। कुछ हिंदी की लघु पत्रिकाओं में लप्यंतरण और अनुवाद सहित प्रका शत हुईं। मौ लक रचना के अतिरिक्त उन्होंने संस्कृत, मै थली और बाङ्ला से अनुवाद कार्य भी कया। का लदास उनके सर्वा धक प्रय क व थे और 'मेघदूत' प्रय पुस्तक। मेघदूत का मुक्तछंद में अनुवाद उन्होंने 1953 ई० में कया था। जयदेव के 'गीत गो वंद' का भावानुवाद वे 1948 ई० में ही कर चुके थे। वस्तुतः 1944 और 1954 ई० के बीच नागार्जुन ने अनुवाद का काफी काम कया। बाङ्ला उपन्यासकार शरतचंद्र के कई उपन्यासों और कथाओं का हिंदी अनुवाद छपा भी। कन्हैयालाल मा णकलाल मुंशी के उपन्यास 'पृथ्वीवल्लभ' का गुजराती से हिंदी में अनुवाद 1945 ई० में कया था। 1965 ई० में उन्होंने वद्यापति के सौ गीतों का भावानुवाद कया था। बाद में वद्यापति के और गीतों का भी उन्होंने अनुवाद कया। इसके अतिरिक्त उन्होंने वद्यापति की 'पुरुष-परीक्षा' (संस्कृत) की तेरह कहानियों का भी भावानुवाद कया था जो ' वद्यापति की कहानियाँ' नाम से 1964 ई० में प्रका शत हुई थी।

प्रका शत कृतियाँ
क वता-संग्रह-
युगधारा, सतरंगे पंखों वाली, प्यासी पथराई आँखें, तालाब की मछ लयाँ आदि।
उपन्यास-
रतिनाथ की चाची, बलचनमा आदि।
संस्मरण-
एक व्यक्ति: एक युग।
कहानी संग्रह-
आसमान में चन्दा तैरे।

पुरस्कार
१) साहित्य अकादमी पुरस्कार -1969 (मै थली में, 'पत्र हीन नग्न गाछ' के लए)।
२) भारत भारती सम्मान (उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, लखनऊ द्वारा)।
३) मै थलीशरण गुप्त सम्मान (मध्य प्रदेश सरकार द्वारा)।
४) राजेन्द्र शखर सम्मान -1994 (बिहार सरकार द्वारा)।
५) साहित्य अकादमी की सर्वोच्च फेलो शप से सम्मानित।
६) राहुल सांकृत्यायन सम्मान पश्चिम बंगाल सरका।

सारांश

१) कई दिनों तक चूल्हा रोया, चक्की रही उदास

कई दिनों तक कहानी कु त्तया, सोई उनके पास
कई दिनों तक लगी भीत पर छिपक लयों की गश्त
कई दिनों तक चूहों की भी हालत रही शकस्त।

उ: प्रस्तुत पंक्तियां नागार्जुन द्वारा र चत एक वास्त वक घटना का परिदृश्य है। भारत में सन् 1807 से 1947 तक कई बार अकाल की स्थिति बनी। अकाल में भुखमरी से कई लोगों की मौत हो गई। अकाल की इस त्रासदी को जिसमें भुखमरी के कारण अकालग्रस्त घर अन्न वहीन रहे, अकाल की इसी वडंबना को क व नागार्जुन ने अपनी क वता में लोक सामान्य के बिम्बों के माध्यम से चत्रित कया है।
क व नागार्जुन अकाल की भयंकर स्थिति का बयान करते हुए कहते हैं क अकाल की प्रचंड दुखमयी समाज में घर के लोगों का ही क्या कहना! उनके चूल्हे और चक्की उस उदासीनता को ग्रहण कर कई दिनों तक रोते रहे। घर की कानी कुतिया को भी अन्न नसीब ना होने के कारण एवं चूल्हा न जलने के कारण उदास रही तथा इसी निराशाजनक परिस्थिति से वशीभूत होकर चूल्हे के पास सोती रही। घर की हालत भुखमरी के कारण अत्यंत दयनीय हो गई, जिस कारण कीड़े- मकोड़े तक गायब हो चुके थे। इस लए छिपक लयाँ भी दीवार पर पहरेदार की भांति दौड़ रही थी। अकाल की इस भयंकर आपदा से बेचारे चूहे भी परास्त होकर बेजान सा प्रतीत होने लगे।

२) दाने आए घर के अंदर कई दिनों के बाद
धुआं उठा आंगन के ऊपर कई दिनों के बाद
चमक उठी घर भर की आंखें कई दिनों के बाद
कौए ने खुजलाई पंखे कई दिनों के बाद।

उ: प्रस्तुत पंक्तियों में नागार्जुन ने अकाल की लंबी अव ध को झेलने के पश्चात घर में आए अन्न की खुशी का वर्णन लोक मान्यताओं के माध्यम से व्यक्त कया है।
क व नागार्जुन कहते हैं अकालग्रस्त घर में कई दिनों पश्चात अन्न के दाने आए, फल ।स्वरुप संपूर्ण घर में आनंद की चमक परिल क्षत होने लग। चूल्हा स क्रय हो गया, चूल्हे के जलने के कारण आंगन के ऊपर कई दिनों बाद धुआं उठा। अन्न बनते देखकर घर के प्रत्येक सदस्य की आंखें उमंग से चमक उठा। अन्न बनने का संकेत प्राप्त करते हुए कौए भी अपने पंखों को खुजलाने लगे, मानो वह कई दिनों के बाद भुखमरी से त्रस्त अपनी निद्रा को भंग कर रहा है। आशा के कल्पना को लेकर वह भी घर की मुंडेर पर अपने आगमनता की पहचान दी।

<u>शब्दार्थ</u>

१) भीत- दीवार।
२) गश्त- भ्रमण।
३) शकस्त- पराजय।

<u>लघु प्रश्नोंत्तर</u>

१) कई दिनों तक चूल्हा रोया, चक्की रही उदास
कई दिनों तक कहानी कु त्तया, सोई उनके पास
कई दिनों तक लगी भीत पर छिपक लयों की गश्त
कई दिनों तक चूहों की भी हालत रही शकस्त।

i) प्रस्तुत पंक्ति कसकी रचना है?
उ: प्रस्तुत पंक्ति नागार्जुन की रचना है

ii) प्रस्तुत पंक्ति में कस भयंकर स्थिती का प्रदर्शन करवाया गया है?
उ: प्रस्तुत पंक्ति में अकाल की भयंकर स्थिती का प्रदर्शन करवाया गया है।

२) "दाने आए घर के अंदर कई दिनों के बाद।"

i) प्रस्तुत पंक्ति कस क वता से उद्धृत है?
उ: प्रस्तुत पंक्ति अकाल और उसके बाद क वता से उद्धृत है।

ii) दाने कई दिनों बाद कस घर में आए?
उ: दाने कई दिनों बाद अकाल से पी ड़त, भुखमरी से त्रस्त घर में आए।